पृष्ठ-संख्या १ से ७

प्रथम अध्याय

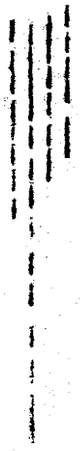

युग चेतना : स्वरूप - विवेचन

चेतना शब्द की उत्पत्तिमूलक व्याख्या
परिभाषा
युगीन चेतना स्वरूप
युगीन चेतना के विविध क्षेत्र
व्यक्तिचेतना और युगीन चेतना
हिंदी साहित्य में युगीन चेतना

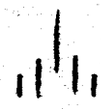

प्रथम अध्याय

युग - चेतना : स्वरूप विवेचन

चेतना शब्द की उत्पत्तिमूलक व्याख्या :

चेतना शब्द का अर्थ बृहद् हिंदी कोश में में इस प्रकार दिया गया है । - चेतना याने होश में आना, बुद्धि विवेक से काम लेना , सावधान होना, सोचना, विचारना ।[१]

' चेतना ' अंग्रेजी शब्द Conscious-ness का हिंदी पर्याय है । आक्सफर्ड डिक्सनरी में चेतना शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया है ।[२]

Con-scious :- awake, aware, knowing things, because one is using the bodily senses and mental powers.

Conscious-ness :- All the ideas, thoughts, feelings, wishes, intentions, Recollections of a person or persons.

परिभाषा -

युगीन चेतना का अर्थ है समय , इतिहास, सभ्यता, संस्कृति, कला, चिंतन दर्शन और जीवन दृष्टि के बारेमें किसी भी युग विशेष में जो भावात्मक और वैचारिक परिवेश होता है उसे युगीन चेतना कहते हैं । युगीन चेतना का क्रियात्मक रूप युगजीवन है ।

युग-चेतना - स्वरूप

कवि और काव्य दोनों का अस्तित्व युग सापेक्ष होता है । कवि के व्यक्तित्व और कर्तृत्व की पृष्ठभूमि में ऐतिहासिक परंपराएं ही नहीं , युग ,युगीन

---

१. बृहद् हिंदी कोश - पृ. ४४८ ।

२. **Oxford Dictionary - A. S. Hornby - p. 182**

चेतना के संस्कार भी दूरगामी प्रभाव डालते हैं । कवि द्रष्टा भी होता है । अत: युग- युग की चेतना और युगीन चेतना को मिलाकर भावी युग के लिए दिशा निर्देश भी करता है । अत: किसी भी कवि के काव्य में युगीन चेतना अपना विशिष्ट महत्त्व रखती है और काल की अनंतता में यह युग चेतना अपनी निजी सत्ता का बोध कराती रहती है । ' चेतना ' एक प्राकृतिक तत्त्व है, जो समाज के लिए , उसकी उन्नति के लिए आवश्यक है । इसके द्वारा मंदगति से क्यों न हो लेकिन समाज में जागृति आने लगती है । क्रांति की तरह तीव्र गति से वह परिवर्तन नहीं करती । परंतु समाज परिवर्तन के लिए साहित्यकार के पास यह प्रबुद्धता होना नितांत आवश्यक है । युग विशेषा की प्रबुद्धता एक विशिष्ट काल का एक दीर्घ परिणाम भरने की क्षमा जिस कवि अथवा लेखक में हो वही अपने साहित्य में युगीन चेतना निर्माण कर सकता है ।

युगीन चेतना के विविध क्षेत्र :

युगीन चेतना में युग विशेषा का सर्वंकष चित्रण होता है और यह चित्रण अतीत से संबंध रखते हुए भविष्य का अनुमान करता है । युगीन चेतना के विविध क्षेत्र इस प्रकार हैं ।

१. राजनीतिक चेतना का मुख्य विषय राजनीति होता है । उससे संबंधित सभी बातों का उसमें समावेश होता है । राजनीति, सत्ता, अधिकार ,कर्तव्य, स्वार्थ, संघर्ष युद्ध, युद्ध के कारण , युद्ध की अनिवार्यता, उसके दुष्परिणाम आदि बातों पर विचार किया जाता है । इसमें कवि का उद्देश्य लोकल्याण होता है ।

२. सामाजिक चेतना - जाति, धर्म, वर्गभेद, वर्णभेद, नारी शोषाण , शासक शासित , ऊँच-नीच भेदभाव, समाज रचना, समाज के स्तर ,सामाजिक संघर्ष के चित्र, सामाजिक रीति, नीति, आचार विचार व्यवहार और समाज की

सामान्य स्थिति, उसकी अभिव्यक्ति और कवि का दृष्टिकोण सामाजिक चेतना है । यहाँ पर केंद्रविंदु समाज होता है ।

३. धार्मिक चेतना - धर्म से संबंधित सभी बातों का चिंतन धार्मिक चेतना में किया जाता है । सामाजिक जीवन में धर्म की स्थिति , विभिन्न धर्मों में संघर्ष । धर्म और धर्म साधना संबंधी विवेचन , पाखंड का खंडन और आडंबर का विरोध किया जाता है । धर्म की संकल्पना क्या है ? तथा प्रचलित धर्म पर भी विचार किया जाता है । इस प्रकार कवि को धर्म के प्रति विचार , उसकी धार्मिक चेतना है ।

४. सांस्कृतिक चेतना - सामाजिक जीवन की आंतरिक मूल प्रवृत्तियों का संमिलित रूप सांस्कृतिक चेतना में प्रकट होता है । समग्र जीवन के अंतस्थल तक पहुँचने का प्रयास किया जाता है । स्थूल आवरण के पीछे सूक्ष्म का जो सत्य , शिव और सुंदर रूप छिपा हुआ है । कवि उसको भी पहचानने का प्रयास करता है। संस्कृति का उक्त रूप है सभ्यता आचार , विचार, विश्वास, परंपराएँ , शिल्पकौशल्य , कला, साहित्य आदि । इन सभी बातों पर सांस्कृतिक चेतना में विचार होता है । कवि की समग्र जीवन दृष्टि सांस्कृतिक चेतना होती है।

५. साहित्यिक चेतना - इसमें साहित्य संबंधी विवेचन, विचार और दृष्टि कोण होता है । साहित्य का स्वरूप, उसके वर्ण विषाय आदि पर विचार करके कवि का दृष्टिकोण प्रकट किया जाता है । काव्य-कला के दो पक्ष - भावपक्ष और कलापक्ष, काव्य के रूप, भाषाशैली, छंद, रस, अलंकार , उक्तिकौशल्य, शब्दशक्तियों के चमत्कार , कवि विशेष के काव्य संबंधी विचार और उनका प्रदेय इन सभी बातों का मूल्यांकन साहित्यिक चेतना में किया जाता है ।

व्यक्ति चेतना और युग चेतना :

काव्य केवल भावना का विषय नहीं है और न दिवा स्वप्न, या कल्पना का विषाय है । काव्य का आधार जीवन है और जीवन केवल व्यक्ति सापेक्ष नहीं होता , युग सापेक्ष होता है । अत: व्यक्तिगत जीवन से युगीन जीवन का नाता सूक्ष्मतंतुओं से जुडा रहता है । व्यक्ति चेतना युग चेतना से प्रभावित होकर अपने अस्तित्व के लिए स्वत्व और अधिकार के लिए संघर्ष करती है। और कभी कभी व्यक्ति चेतना इतनी प्रबल हो जाती है कि वह युग चेतना का नेतृत्व कर उसे जीवन की नई दिशा देती है ।

दिनकर के काव्य में गांधीवादी विचार धारा व्यक्ति चेतना पर केंद्रित है और राजनीतिक चेतना के संदर्भ में उसकी अभिव्यक्ति हुई है । दिनकर के काव्य में प्रगतिशील चेतना का संबंध सामाजिक जीवन से है । जिसे वे मानवता वादी चेतना से जोडते रहे । दिनकर का काव्य पौरुष काव्य है और वे पौरुष को ही मानव चेतना का मेरुदंड मानते हैं । दिनकर मानव जीवन में ज्ञान , क्रिया , शक्ति को मानव चेतना समझाते हैं । काव्य का मूलभूत अन्तर्वर्ती स्रोत युग चेतना का स्वच्छदर्पण है । जहाँ सामान्य कवि युगधारा के प्रवाह में बहते दृष्टिगोचर होते हैं, वहाँ महान कवि अपनी मौलिक प्रतिभा, स्वस्थ जीवन दर्शन एवं विश्वस्त मार्गदर्शन द्वारा युग के रूढि विगलित परंपराबद्ध और विकास विरोधी तत्त्वों को ललकारते हैं । इस प्रकार देश और समाज के निर्माण में कवियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है ।

हिंदी साहित्य में युग चेतना :

आधुनिक हिंदी साहित्य का सिंहावलोकन करने पर स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि कविता के क्षेत्र में युगीन परिस्थिति का यथार्थ चित्रण करके

उसके प्रति सचेत रहने का काम सर्वप्रथम भारतेंदु हरिश्चंद्र ने किया । उनकी ' नीलदेवी ' , ' भारत दुर्दशा ' आदि नाटकों में उल्लिखित कविताओं के अंतर्गत तत्कालीन जनजीवन की पतितावस्था का मार्मिक चित्रण हुआ है । भारतेंदु ने तत्कालीन जनजीवन की दयनीय स्थिति का चित्रण करके लोगों को उसके प्रति सचेत किया । और जन जीवनमें क्रांति एवं विद्रोह की चिनगारी सुलगाने का प्रयत्न किया । हिंदी कविता के माध्यम से भारत में स्वदेशानुराग जागृत करके अपने साहित्य में युगीन चेतना को साकार किया ।

भारतेंदु के पश्चात भारतेंदु मंडल के प्रतापनारायण मिश्र, बदरीनारायण चौधरी, जगमोहन सिंह, राधाचरण गोस्वामी, अंबिका दत्त व्यास आदि ने अपने साहित्य में युगीन चेतना व्यक्त की । अपनी कविताओं में युगीन समस्याओं का चित्रण किया । भारत की तत्कालीन दयनीय परिस्थिति पर आँसू बहाए ।सामाजिक कुरीतियों पर वज्र पहार किया , धार्मिक अनाचार के प्रति क्षोभ प्रकट किया । अतीत का स्मरण दिलाकर वर्तमान परिस्थिति में नवचेतन्य निर्माण करने का प्रयास किया । साथ में उस पर क्षोभ भी प्रकट किया । इनके उपरांत अयोध्यासिंह उपाध्याय का नाम लिया जाता है । आपने ' चोखे चौपदे ' तथा ' चुभते चौपदे ' नामक ग्रंथों का निर्माण करके तत्कालीन जन-जीवन को झाकझोरने का सुंदर प्रयास किया । इन काव्यों में उनकी युगीन चेतना सशक्त रूप में व्यक्त हुई है । हमारे समाज के धन के लोभियों को फटकारा है, दुश्चरित्र व्यक्तियों को कोसा है, बे-मेल विवाह करनेवालों को डाँटा है । कायर , निकम्मे, दब्बू एवं आलसियों पर व्यंग्यबाणों की बौछार की है तथा जाति-विनाशक, धर्म विनाशक, देशद्रोहियों को कोसा है । साथ में समाज सुधारक , देशभक्त, जाति उद्धारक आदि आदर्श व्यक्तियों के उदाहरण देकर उनकी खूब प्रशंसा की है । इस प्रकार हरिऔध ने समाज की बुराइयों को जनता के सामने रखकर धर्म में व्याप्त अनाचारों से जनता

को अवगत कराकर देश के साथ गद्दारी करनेवालों का पर्दाफाश किया है। इसके पश्चात गुप्त जी ने ' भारत भारती ' का निर्माण करके अपनी युगीन चेतना व्यक्त की है । वतमान भारतीय जीवन को अतीत से तुलना की और अतीत से प्रेरणा लेकर जन-जीवन में देशप्रेम की भावना को जगाया ।

तदनंतर युगीन चेतना सशक्त रूप में माखनलाल चतुर्वेदी और बालकृष्ण शर्मा नवीन में पाई जाती है । युगीन चेतना में राजनीतिक चेतना को अधिक महत्त्व दिया है । येदोनों विद्रोही एवं क्रांतिकारी कवि हैं । दोनों ने तत्कालीन राजनीति में सक्रिय भाग लिया था । इन दोनों कवियों के विचारों एवं भावों में क्रांति का स्वर भरा हुआ है । उन्होंने खुलकर ब्रिटिश सत्ता का विरोध किया । उनकी कविताएँ देश पर बलिदान होने की भावना से परिपूर्ण हैं । देश में विद्रोह उत्पन्न करने की शक्ति से भरी हुई हैं । उसने पराधीनता को कसक और आजादी की चाह है ।

अपने युग के प्रति जागृत रहकर काव्य में युगीन चेतना को सशक्त रूप से प्रकट करके अपने युग विशेषा को सचेत करनेवाले इन कवियों में ' दिनकर ' का नाम उल्लेखनीय है । ' दिनकर ' में जो राजनीतिक चेतना पाई जाती है उसपर माखनलाल चतुर्वेदी तथा मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं का पर्याप्त प्रभाव पडा है । उनकी सर्वप्रथम कृति ' प्रणभंग ' पर गुप्त जी के ' जयद्रथवध ' का प्रभाव परिलक्षित होता है । कवि ने प्रणभंग की भूमिका में स्वयं स्वीकार किया है कि यह काव्य जयद्रथवध के अनुकरण पर लिखा गया है । गुप्त जी की ' भारतभारती ', ' किसान ', ' शकुंतला ' आदि रचनाओं से तथा रामनरेश त्रिपाठी से दिनकर प्रभावित रहे । इस राष्ट्रकवि की प्रतिभा का जो ढाँचा गढा गया था उसमें रूपरंग भरने का काम उनके समकालीन माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण , रामनरेश त्रिपाठी, सुभद्राकुमारी,

इत

रवींद्रनाथ टगोर , इकबाल आदि शिल्पियों ने किया । दिनकर का वक्तव्य इस प्रकार है -- '' मेरे सब से प्रिय कवि मैथिलीशरण , माखनलाल, सुभद्रा, नवीन और रामनरेश त्रिपाठी थे । बंगला सीखकर मैंने रवींद्र और नजरुल से भी परिचय बढा लिया । पीछे जब मैं नौकर करने लगा तब मैंने उर्दू सीखी और इकबाल तथा जोश का भक्त बन गया । ''[३]

०

---

३. चक्रवाल - दिनकर , पृ. २६,२७ ।